

RV. 8, 1, 31. आ सोमो अस्मिं अरुहत् *ist bei uns eingekohrt* 48, 11. 89, 5. 9, 40, 2. 63, 22. योनिम् AV. 3, 20, 1. सा भूमिमा रुराक्ष्य वक्ष्यं आत्ता व-  
धूरिव 4, 20, 3. आ रुराक्ष्य तर्मसो ज्योतिः 8, 1, 8. दिवि घोष आरुहत् RV. 7, 83, 3. त्वे असुर्यमाहृहत् 5, 10, 2. रथे 8, 22, 9. यो असुर्यः शमीगर्भं आरु-  
रोहृत् त्वे सर्वा TB. 1, 2, 1, 8. पशुम् CAT. Br. 7, 3, 8, 17. तुलाम् 11, 2, 7, 33.  
आ रुराक्ष्यार्थुर्गर्भं वृषानाः RV. 10, 18, 7. उखामर्चिः CAT. Br. 6, 6, 8, 8. be-  
schreiten: अग्रिम् 7, 3, 8, 17. 5, 8, 40. 9, 2, 2, 2. bei der Begattung KAUC.  
89. — ग्रामारुराक्ष्य so v. a. starb RĪĀ-TAR. 3, 385. स्वर्लोकमारुराक्ष्यन्  
BHĀG. P. 4, 12, 31. आरुराक्ष्यन् (1) 11, 17, 30. गिरिमारुराक्ष्य MBH. 3, 11949. HA-  
RIV. 5493 (pass.). 7612. VOP. 5, 21. मरुदेशम् MBH. 3, 2868. प्रासादान् R.  
2, 33, 4. प्रकारम् BHATT. 8, 56. आरुहृत् परं पदम् BHĀG. P. 4, 21, 7. घच-  
लम् MBH. 9, 3044. R. 6, 14, 17. Spr. 1740. कीटो ऽपि — आरुराक्ष्यति सतो  
शिरः Spr. 689. रथम् MBH. 3, 1724. 1727. 1729. 3, 7125. R. 2, 40, 11. 13.  
3, 48, 6. 7, 46, 23. KĀM. NĪTIS. 7, 30. ÇĀK. 93, 11. 96, 2. PRAB. 79, 2. VET. in  
LA. (III) 31, 13. आरुराक्ष्यमाणं रथम् MBH. 1, 5734. 3, 1728. 1731. 8, 2964.  
HARIV. 6306. R. 7, 46, 22. BHĀG. P. 8, 11, 16. 10, 47, 65. आरुराक्ष्यतामयं रथः  
R. 3, 48, 5. यो न पानं न पर्यङ्कं न पीठं न गर्जं रथम् । आरुराक्ष्यत् MBH. 4, 96.  
विचारदोलाम् KATHĀS. 9, 87. 101, 188. आसनम् Spr. 5393. BHĀG. P. 4, 8,  
11. नावम् R. 1, 26, 3 (27, 3 GORR.). 2, 52, 8. 69. 89, 14. 21. Spr. 3537. KA-  
THĀS. 26, 7. RĪĀ-TAR. 5, 84. BHĀG. P. 8, 24, 42. क्यान् R. 2, 68, 10. 97, 20.  
VARĀH. BRH. S. 44, 22. 93, 13. KATHĀS. 13, 9. 18, 18. 26, 86. ÇUK. in LA. (III)  
35, 15. खगाधिपम् BHĀG. P. 8, 4, 26. आरुराक्ष्ये कथं त्वयम् MBH. 13, 539.  
5, 3854. आरुराक्ष्यति शनैर्भृत्या धुन्वत्तमपि पार्थिवम् Spr. 749. गावश्चारुहृ-  
क्षुर्वषान् besprangen HARIV. 8290. यत्रारुराक्ष्यति जेतारो वृक्षं च पराजि-  
ताः (ein Spiel) in dem die Sieger reiten und die Besiegten tragen (ge-  
ritten werden) BHĀG. P. 10, 18, 21. आरुराक्ष्यं मम श्रेणीं नेष्यामि त्वां वि-  
हायसा MBH. 1, 5966. जङ्गम् KATHĀS. 18, 310. स्कन्धम् 165. 349. अङ्गम्  
Spr. 2855. शाखाम् R. Einl. अग्रिमारुराक्ष्यते so v. a. wird den Scheiter-  
haufen besteigen R. 6, 72, 57. वेदोम् MBH. 3, 11018 (S. 370). KATHĀS. 16,  
79. क्षेत्रमारुराक्ष्य मालम् MEGH. 16. ÇĀK. 62, 15. आरुराक्ष्यतिरे गिरि KATHĀS.  
25, 26. तत्रारुराक्ष्यत् MBH. 3, 8002. वनेषु 2545. VARĀH. BRH. S. 79, 6. रथा-  
दिषु BHATT. 14, 8. निप्रमारुराक्ष्यताम् impers. (sc. रथे) R. 2, 46, 24. शय्या-  
सनयोः MĀRK. P. 34, 85. नाविं MBH. 3, 12776. करणकायाम् KATHĀS. 13,  
21. fg. विक्रगे 12, 147. 152. स्कन्धे 18, 156. 380. आरुराक्ष्यति न यः स्वस्य  
वंशस्याग्ने धृता यथा Spr. 679. आरुराक्ष्यत् a) in pass. Bed.: आरुराक्ष्यत् वृत्ता भव-  
ता P. 3, 4, 72. Sch. (वारुणैः) महामात्रोत्तमाहृहृः geritten von HARIV. 5469.  
MBH. 4, 1031. ऽनृपस्थानं bestiegen BHĀG. P. 4, 14, 4. impers.: आरुराक्ष्यत् भव-  
ता P. 3, 4, 72. Sch. — b) in act. Bed.: हूरमारुराक्ष्यत् सविता ÇĀK. 57, 2, v. 1.  
आरुराक्ष्यत् gestiegen und wieder gefallen BHĀG. P. 11, 7, 74. शमीर्मसुर्य  
आरुराक्ष्यत् AV. 6, 11, 1. व्योम KATHĀS. 48, 84. युगात्तरमारुराक्ष्यत् सविता ÇĀK. 57,  
2. अक्षीन् RAGH. 6, 77. MEGH. 18. वृत्तम् P. 3, 4, 72. Sch. कविा वृत्तायमा-  
हृहृः HIT. 38, 11. अश्वम्, वृत्तम्, कृत्स्नम्, नावम्, खरम्, उष्ट्रम् M. 4, 120.  
रथम् R. 2, 40, 17. क्यम् 1, 19, 23. चिताम् KATHĀS. 27, 98. अम्बरोत्सङ्गम्  
22, 10. ब्रह्मणाः पन्थानमारुराक्ष्यताः sich erhoben habend auf, betreten habend  
MAITREJUP. 6, 29. पवनपद्वीम् MEGH. 8. पौवनपद्वीम् PĀNĀT. 87, 14. उ-  
त्पयम् R. 3, 43, 6. तैरि KATHĀS. 29, 129. सिंहासने 18, 53. मठोपरि 24,  
218. स्वराहृहृः BHATT. 7, 81. प्रासादाहृहृः HIT. 4, 6. रथाहृहृः ÇĀK. 97, 1, v. 1.  
VIKR. 5, 4. KATHĀS. 18, 388. VET. in LA. (III) 30, 17. RĪĀ-TAR. 5, 218.

क्याहृहृत् reitend auf, sitzend auf Spr. 4883. VARĀH. BRH. S. 58, 56. fg.  
KATHĀS. 12, 157. 18, 384. RĪĀ-TAR. 4, 277. MĀRK. P. 78, 24. PĀNĀT. 43,  
5. 44, 23. 46, 6. Verz. d. B. H. No. 936. स्कन्धाहृहृत् KATHĀS. 18, 157. ल-  
ताहृहृत् (विक्रगे) BHĀG. P. 5, 2, 4. स्थलाहृहृत् auf dem Erdboden stehend (d. i.  
nicht zu Wagen sitzend) M. 7, 91. सर्वभूतानि यन्नाहृहृतानि gesetzt auf BHĀG.  
18, 61. चक्राहृहृत् PĀNĀT. 163, 2. कृत्ताहृहृत् auf der Hand liegend HARIV.  
12181. दोलाहृहृत् auf einer Schaukel sitzend, sich schaukelnd PĀNĀT. 236,  
16. so v. a. schwankend, in Zweifel setend KATHĀS. 32, 9. 57, 102. 67, 30.  
दोलाहृहृत् इवाभवत् 83, 31. 119, 90. आहृहृत् ohne Ergänzung reitend: स्वा-  
हृहृः (साहृहृः die neuere Ausg.) सादिभिः HARIV. 5470. eingestiegen (in ein  
Schiff) R. 2, 89, 17. aufgesteckt, oben aufgesetzt: आहृहृत्प्रोच्छ्रितच्छक्रं कु-  
ञ्जरं KATHĀS. 19, 63. mit einem loc. so v. a. enthalten in, liegend in:  
प्रनासु वा एष (अग्निः) एतर्क्याहृहृत्: TS. 5, 1, 5, 5. प्रमातर्यनाहृहृत् ऽनधिगत  
इति यावत् Schol. zu KĀP. 1, 88. रेफाहृहृत् मूर्त्यः स्युः शक्तपरिस्त्र एव  
च WEBER, RĀMAT. Up. 289. — c) n. das Bespringen: गवाहृहृत्षु (ग-  
वारोक्ष्येषु die neuere Ausg.) HARIV. 4104. — 2) anwachsen: नासिका  
हृहृत् भार्यायास्तामरोपयत् । गुरुनासी मुखे तस्या न च तत्रारुराक्ष्यत् सा ॥  
KATHĀS. 61, 16. — 3) eine Bogensehne steigt, wenn das unbefestigte Ende  
derselben mit der oberen Spitze des aufrecht stehenden Bogens verbun-  
den wird: आरुराक्ष्यतामये धनुषा KATHĀS. 27, 8; vgl. weiter unten u.  
caus. 3). — 4) aufsteigen so v. a. hervorgehen, entstehen, sich entwickeln:  
आरुराक्ष्यतामयेषु वपुषा KATHĀS. 27, 8. या प्रजा पूर्वमारुराक्ष्यता मानसी HARIV.  
11843. इत्याहृहृत्बहुप्रतर्कमपरिच्छेदाकुलं मे मनः ÇĀK. 106. आहृहृत् रूपा —  
अनेन KUMĀRAS. 7, 67. आहृहृत्वेग (शर्व) KATHĀS. 20, 81. पौवनाहृहृत् Spr.  
2597. तदागमारुराक्ष्यत्प्रकर्ष RAGH. 5, 61. NILAK. 48. 51. 56. — 5) an Et-  
was gehen, zu machen beginnen; sich begeben in, gerathen in, erreichen,  
gelangen zu: अन्वर्वाणं श्लोकमा रुराक्ष्यते दिवि RV. 4, 31, 12. न संशयमनारुराक्ष्य  
नरो भद्राणि पश्यति । संशयं पुनरारुराक्ष्य यदि जीवति पश्यति ॥ sich in Ge-  
fahr begeben Spr. 1483. आरुराक्ष्यति किमर्थं त्वमीदृशान्प्राणासंशयान् KA-  
THĀS. 26, 128. 18, 373. आरुराक्ष्यति संदेहम् geräth in Gefahr Spr. 3422.  
न दर्पमारुराक्ष्यति 4353. आरुराक्ष्यत् कुमुदाकारोपयाम् bekam Aehnlichkeit mit  
d. i. wurde ähnlich RAGH. 19, 34. तव तुलां पदमारुराक्ष्यति दत्तवाससा KUMĀ-  
RAS. 3, 34. आरुराक्ष्यत् प्रतिज्ञां स सर्पसन्नाय so v. a. er gelobte MBH. 1, 2015.  
R. 7, 17, 17. आहृहृत् a) in pass. Bed.: ऽसमाधियोग BHĀG. P. 3, 8, 21. नि-  
त्याहृहृत्समाधित्वान् 33, 27. — b) in act. Bed.: पदम् der sein Ziel erreicht  
hat BHĀG. P. 3, 32, 25. संशयम् in Gefahr gerathen ÇĀK. 92, 6. उपायात्त-  
रमपि हृदयमारुराक्ष्यत् so v. a. ist mir eingefallen PRAB. 37, 4. उदयम् auf-  
gegangen (vom Monde) und zugleich zur Höhe gelangt (von einem Für-  
sten) Spr. 3650. नवपौवनम् KATHĀS. 23, 199. पौवनाहृहृत् 18, 261. 52, 94.  
योगाहृहृत् BHĀG. 6, 4. BHĀG. P. 3, 18, 15. मानाहृहृत् 4, 26, 8. स्वगोचराहृहृत्  
ÇĀK. zu BRH. ĀR. Up. S. 256. 282. मनोरथाहृहृत् seinen Wünschen —  
seiner Phantasie nachhängend (zugleich wohl in dem Wagen des Her-  
zens fahrend) KATHĀS. 10, 202. — 6) न वारुराक्ष्यामि R. GORR. 2, 68, 36  
fehlerhaft für नान्वारुराक्ष्यामि. — Vgl. आरुराक्ष्यत् fg., आहृहृत्. आरुराक्ष्यत् fg.,  
आरुराक्ष्यत् fg. — caus. 1) aufsteigen machen, besteigen lassen, setzen auf;  
beschreiten lassen; mit dopp. acc. oder mit acc. und loc.: सूर्ये दिव्या-  
रुराक्ष्यः RV. 1, 51, 4. 4, 13, 2. तीर्थेनाश्वम् KĀTJ. ÇR. 17, 3, 23. चर्म 15, 5.  
23. अश्वमानम् ACY. GRH. 1, 7, 7. 4, 6, 8. नावम् KAUC. 71. अश्वम् 17. कृदि-